भगत रविदास – सबद २९

जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥

रागु बिलावलु, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ८५८

जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥१॥
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥२॥
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥३॥२॥

सार: धन्य होने का मतलब है जागी हुई चेतना की अंदरूनी चमक जो जहाँ भी रहती है, वहाँ सद्भाव और एकता फैलाती है। धन्य है वह स्थान जहाँ ऐसा व्यक्ति रहता है, उसकी उपस्थिति वातावरण को संतुलित करती है। उसका घर धन्य है क्योंकि वह एक ऐसी जगह बन जाता है जहाँ भय और द्वैत कमज़ोर पड़ जाते हैं। उसकी पवित्रता धन्य है क्योंकि यह एकता को "हम" और "वह" का भेद नहीं रचती। वह पूरी दुनिया को परिवार की तरह देख, एकता में जीते हैं। उसका मन कम निर्णय करता है इसलिए उसकी वाणी कम आघात पहुँचाती है। ऐसी अंदरूनी जागृति दूसरों के लिए एक सहारा बन जाती है क्योंकि यह बिना किसी शर्त के सम्मान देती है तब एकता एक विचार नहीं बल्कि स्वभाव बन जाती है।

जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥
जिस भी परिवार में कोई समर्पित साधक पैदा होता है, यह साबित करता है कि पवित्र वंश किसी खास वर्ग से नहीं बल्कि गुणों से पहचाना जाता है।

बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
चाहे ऊँची जाति का हो या नीची जाति का और चाहे गरीब हो या अमीर, केवल वही लोग जो इन भेदों से ऊपर उठते हैं, दुनिया में पवित्र सुगंध फैलाने के लिए जाने जाते हैं। यह पवित्रता स्पष्टता का प्रतीक है जहाँ भेद मिट जाते हैं और विवेक प्रवाहित होता है। (१)(विराम)

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
चाहे कोई पुजारी, व्यापारी, मज़दूर हो या सबसे नीची जाति का अछूत हो, उसे केवल उसकी मानसिकता के आधार पर ही बुरा माना जा सकता है। यह दोषपूर्ण जाति व्यवस्था हमें याद दिलाती है कि हमारे इरादे किसी भी सूचक से कहीं ज़्यादा मूल्य रखते हैं।

होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥१॥
कोई भी सार्वभौमिक चेतना का ध्यान करके पवित्र हो सकता है, वह स्वयं को मुक्त कर, अपने पूरे वंश का उद्धार करते हैं। यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत परिवर्तन का एक लहरदार प्रभाव होता है जो हमारे आस-पास के लोगों तक फैलता है। (१)

धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥
धन्य है उनका गाँव, उनका निवास और धन्य है उनकी पवित्रता जो पूरी दुनिया को अपना परिवार देखती है। यह दर्शाता है कि एक जागृत चेतना जो एकत्व को बढ़ावा देती है, वह सच में धन्य है।

जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥२॥
जिन्होंने ज्ञान का सार चखा है, वह दूसरे सांसारिक सुखों को छोड़ देते हैं। अंतर्दृष्टि के इस सार में लीन होकर, वह बुराइयों को त्यागकर उन पर विजय प्राप्त करते हैं। यह दिखाता है कि कैसे आध्यात्मिक संतुष्टि लालसाओं को दूर करती है जिससे एक सार्थक जीवन प्राप्त होता है। (२)

पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥

विद्वान, योद्धा, सम्राट और राजा, कोई भी समर्पित, प्रबुद्ध साधक के बराबर नहीं है। यह उस संप्रभुता को स्थापित करता है जिसमें आध्यात्मिक एकता को बौद्धिक अधिकार, शारीरिक शक्ति और सामाजिक या धार्मिक वर्चस्व से ऊपर महत्व दिया जाता है।

जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥३॥२॥

जैसे कमल का पत्ता पानी में रहकर भी भीगता नहीं, रविदास कहते हैं कि जो लोग इस तरह से जीते हैं, वह इस दुनिया में रहने के लिए ही पैदा हुए हैं। यह जीवन से प्रभावित हुए बिना जीवन जीने की कौशल क्षमता का प्रतीक है, एक ऐसा जीवन है जो जीने योग्य है। (३)(२)

तत्त्व: भक्त रविदास आध्यात्मिक योग्यता पर ज़ोर देकर जाति व्यवस्था को चुनौती देते हैं। उनका तर्क है कि एक ज्ञानी मन की चमक के सामने सामाजिक और धार्मिक दर्जे से जुड़े सूचकों का कोई महत्व नहीं है। जहाँ एक राजा एक राज्य पर शासन करता है, वहीं एक सच्चा साधक स्वयं पर राज करता है जो उसे श्रेष्ठ बनाता है। यह एहसास प्रतीकात्मक रूप से बताता है कि असली जन्म जैविक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है जो दुनिया में रहते हुए भी उसकी उलझनों से अछूता रहता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com